मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षिकाओं की चिंता के स्तर एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

बिंदू सिंह* एवं डा0 नीता गुप्ता**

*शोधार्थिनी (शिक्षाशास्त्र) आई.एफ.टी.एम., विश्वविद्यालय, मुरादाबादए (उत्तर प्रदेश)

**एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग) आई0एफ0टी0एम0 विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

सारांश

देश की प्रगति राष्ट्र की उन्नति एवं समृद्धि उसकी शिक्षा पर निर्भर करती है उसी प्रकार हमारे राष्ट्र की उन्नति भी शिक्षा पर ही आधारित है। भारत के भाग्य का निर्धारण उसकी कक्षाओं में होता है। देश के उत्थान, विकास और संगठन का महत्वपूर्ण कार्य विद्यालयों से निकलने वाले शिक्षार्थी और उनके शिक्षात्मक गुणों पर आधारित है। शिक्षा का सम्बन्ध किसी व्यक्ति या वर्ग से न होकर देश की पूरी जनसंख्या से है। प्राचीन युग में शिक्षा को न तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची माना गया और न जीविकोपार्जन का साधन। इसके विपरीत शिक्षा को वह प्रकाश माना गया है जो व्यक्ति को अपना बहुअंगी विकास करके उत्तम जीवन व्यतीत करने व मोक्ष प्राप्त करने में सहायता देती है। "शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है" अतः इसे विद्यालय की चार दीवारी तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता। इसमें जरा भी सन्देह नहीं है कि शिक्षा ही बालक की संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है। शिक्षा से ही समझ और चिन्तन में स्वतंत्रता आती है। शिक्षा ही आत्म निर्भरता की आधार शिला हैं।" विकास की प्रत्येक श्रेणी के लिए शिक्षा आवश्यक है। फिर वह विकास चाहे व्यक्तिगत हो अथवा राष्ट्रीय। मानव व्यक्तित्व तथा समाज एवं राष्ट्र के उन्नयन के प्रभावी माध्यम के रूप में शिक्षा का महत्व सर्वोपरि है। प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनायें प्रस्तुत के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये है– मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिंता के स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य क्षेत्रीय आधार पर सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिन्ता के स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य वर्ग के आधार पर सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिन्ता के स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य विद्यालय की स्थिति में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

संकेत शब्द :– *शिक्षक, चिंता का स्तर,शैक्षिक उपलब्धि।*

प्रस्तावना :–

शिक्षा के अभाव में तो व्यक्ति समाज से विलग होकर नितांत एकाकी, स्वार्थी एवं स्वकेन्द्रित बन जायेगा, और उसके व्यक्तित्व की मानसिक प्रवृत्तियों का उर्ध्वगामी विकास नहीं हो पायेगा, सामाजिक व भौतिक उन्नयन की कल्पना भी समुचित शिक्षा विधान के अभाव में कोरी मृगमरीचिका ही है। यही कारण है कि विश्व के प्रत्येक समाज ने शिक्षा के महत्व को हृदयंगम का अपने विवेक के अनुरूप अपनी प्रणाली का विकास किया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि विभिन्न कालों में वही राष्ट्र महान बनकर सभ्यता एवं संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान कर सका जिसकी शिक्षा व्यवस्था उन्नत और अपने नागरिकों को आदर्शों का बोध कराने में सक्षम थी

शिक्षा केवल व्यक्तित्व निर्माण एवं सामाजिक संरचना का ही माध्यम नहीं वरन् राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का भी अभिन्न अंग है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने देश की प्राचीन गौरवमयी सांस्कृतिक परम्परा से अवगत और अनुप्राणित होता है। शिक्षा ही व्यक्ति को अतीत का बोध कराकर उसमें राष्ट्रीय चेतना प्रवाहित करती है। शिक्षा की सतत् ज्योति से आलोकित सांस्कृतिक परम्परा की पृष्ठभूमि में ही राष्ट्रीयता का सही स्वरूप उद्भासित हो सकता है। शिक्षा ही व्यक्ति को राष्ट्र के प्रतिनिष्ठा एवं समर्पण का संदेश देती है। किसी भी राष्ट्र की महत्ता एवं प्रगति उसके नागरिकों के शैक्षिक स्तर पर निर्भर करती है। सुशिक्षित नागरिकों के माध्यम से ही राष्ट्र का अतीत, वर्तमान से समाहित होकर कल्याणमय भविष्य की दिशा का निर्धारण करता है। शिक्षा की जितनी आवश्यकता पुरूष के लिए है उतनी ही नारी के लिए। इसके कारण ही आज नारी अपने कंधों पर परिवार की जिम्मेदारी ली है इसलिए आज शिक्षित महिलाओं को कामकाजी माना जाता है।

शिक्षा के द्वारा बालक की नैसर्गिक, अविकसित एवं सुप्त क्षमताओं और गुणों के विकास के लिए इस प्रकार के उचित परिवेश की आवश्यकता है जिससे कि वह अपने शिक्षकों से प्रेरित हो सके तथा उनसे अनुभव प्राप्त कर समाज का एक सुयोग्य नागरिक बन सके। जबकि बालक का विद्यार्थी जीवन–संघर्षों से युद्ध, समस्याओं का सामना एवं व्यक्तियों के साथ व्यवहार करना, शिक्षा के केन्द्रों से ही सीखना होता है। शिक्षा की व्यवहारिक सभी जिम्मेदारी शिक्षक की होती है। हम शिक्षक के सम्बन्ध में विचार करें तो पहले जो आश्रम व्यवस्था में गुरू थे वही आज के शिक्षक है। पहले महान् का पर्याय थे। अब शिक्षा की प्रक्रिया की औपचारिक पूर्ति करने वाले प्राणी। अथवा स्वयं के मूल्यों को शिक्षा में समायोजित करने वाले, अपने कार्यों का दायित्व निभाने वाले तथा केन्द्रों पर उचित शिक्षा देने वाले वह आदर्शोन्मुखी होकर बालकों को उनके आदर्श मूल्य तथा कर्तव्यों की ओर उन्मुख करने में सक्षम थें। आज वह शिक्षक स्वयं भी अपने आदर्श, मूल्य कार्य आदि के प्रति शंकित है। उनमें एक यांत्रिकता व्यक्त हो गयी है। आज का शिक्षक आधुनिकता की अंधी दौड़ में तनाव ग्रस्थ रहता है तथा धन का लोभी हो गया है। 8 सितम्बर, 2004 के समाचार जगत में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री उमेश चन्द्र गुप्ता कहते हैं कि "अवांछित स्थानान्तरणों, सरकार द्वारा अकर्मण्यों को तथा कथित संरक्षण और गैर कार्यों में नियुक्ति के कारण शिक्षक मानसिक तनाव की स्थिति में रहता है तथा अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं पर खरा उतरना विसंगत लगता है। वह विद्यार्थी के साथ पूर्ण न्याय नहीं कर पाता।" क्योंकि शिक्षक की व्यक्तिगत मूल्यों में कमी आ गयी है। उनमें अपने कार्य के प्रति संतुष्टि नही है वह शिक्षा के रूपों को बहुआयामी से तुलना करते है।

आवश्यकता एवं महत्व :–

छात्र के व्यवहारो पर उसके व्यक्तित्व तथा शैक्षिक उपलब्धियो पर पारिवारिक वातावरण का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। एक घर जिसका अनुशासनिंक वातावरण एकान्तपूर्ण, एकाधिकारवादी, रोबदार व डाट से भरपूर हो, वह छात्र के विकास की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता। परन्तु एक शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को अत्यधिक प्रभावित करता है। अगर शिक्षक चिन्तत है तो विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। एक शिक्षक जब पूरे मनोयोग से कक्षा में शिक्षण करता है तो वह विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सहित सर्वागीण विकास को प्रभावित करता है, परन्तु सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वेतन विसंगति के कारण कुछ शिक्षकों को अच्छा वेतन नहीं मिलता है जिससे उनके अन्दर कुण्ठा पैदा हो जाती है और भविष्य के प्रति उनकी चिन्ता का जन्म होता है। यह चिन्ता शिक्षकों को प्रभावशाली शिक्षण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और शिक्षकों की चिन्ता के मध्य सम्बन्ध को जानने का प्रयास है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के विकास में सहायक होंगे।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन :–

निम्नलिखित विद्यार्थियों ने प्रस्तुत विषयों को शोध का विषय बनाया है जिसमें ठाकुर, नवीन (2014), मित्तल, शर्मा एवं श्रीवास्तव (2015), अशहर तौसीफ (2015), रौफी, एम0 (2016), रजा नेहा व दूबे चन्द्र (2016) और पमेला रबुरू (2017) आदि प्रमुख है।

समस्या कथन :–

मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक में कार्यरत् शिक्षिकाओं की चिंता के स्तर एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :–

चिंता का स्तरः– चिंता संज्ञानात्मक शारीरिक, भावनात्मक और व्यवहारिक विशेषता वाले घटकों की मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दशा है। यह घटक एक अप्रिय, भाव बनाने के लिए जुड़ते हैं जो की आमतौर पर बेचैनी, आशंका, डर और क्लेश से, सम्बंधित है। चिंता एक सामान्यकृत मनोदशा है जो कि प्रायः न पहचाने, जाने योग्य किसी उपन्न द्वारा उत्पन्न हो सकती है। देखा जाए तो यह भय से कुछ अलग है, जो कि किसी ज्ञात खतरे के कारण उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त भय, भागने और परिहार के विशिष्ट व्यवहारों से संबन्धित है, जबकि चिंता अनुभव किये गये अनियंत्रित या अपरिहार्य खतारों का परिणाम है।

शैक्षिक उपलब्धि :– शैक्षिक उपलब्धता से तात्पर्य है, विद्यालय में अध्यापित विषयों में सन्तोषजनक ज्ञान प्राप्त करना। किसी विद्यार्थी के विद्यालयी विषयों मे प्राप्त ज्ञान का पता एक लिखित प्रमाण पत्र के रूप में प्राप्त होता है जो विद्यार्थी विषयक कार्य के बारे में सूचित करता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिंता के स्तर एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य क्षेत्रीय आधार पर सम्बन्ध का अध्ययन।
2. मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिंता के स्तर एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य वर्ग के आधार पर सम्बन्ध का अध्ययन।
3. मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिंता के स्तर एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य विद्यालयी की स्थिति के आधार पर सम्बन्ध का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :–

1. मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिंता के स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य क्षेत्रीय आधार पर सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
2. मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिन्ता के स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य वर्ग के आधार पर सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
3. मुरादांबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिन्ता के स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य विद्यालय की स्थिति में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण :–

शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकडों का संकलन किया गया।

न्यादर्श :–

वर्तमान लघु शोध हेतु 1200 शिक्षकों को शामिल किया गया है।

उपकरण :–

चिंता का स्तर से सम्बन्धित मापनी – **ए0के0पी0 सिन्हा एवं एल0एन0के0 सिन्हा**

शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित मापनी – **स्वनिर्मित**

तालिका संख्या – 1

मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाली शिक्षिकाओं के चिंता का स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य क्षेत्रीय आधार पर सह–सम्बन्ध की स्थिति एवं प्रभाव

क्र.स.	समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता
1.	ग्रामीण शिक्षिकाएं	500	0ण्0889	सकारात्मक
2.	शहरी शिक्षिकाएं	700	0ण्2261	सकारात्मक

तालिका संख्या 1 में मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाली शिक्षिकाओं की चिता के स्तर एवं विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है जिसमें ग्रामीण शिक्षिकाएं और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.0889 प्राप्त हुआ है जो दोनों के मध्य सकारात्मक सहसंबध को दर्शाता है अर्थात् इससे सिद्ध होता है कि ग्रामीण शिक्षिकाओं की चिंता के स्तर और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है। तालिका संख्या 1 में मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाली शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है जिसमें शहरी शिक्षिकाएं और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.2261 प्राप्त हुआ है जो दोनों के मध्य सकारात्मक सहसंबध को दर्शाता है अर्थात् इससे सिद्ध होता है कि शहरी शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाली शिक्षिकाओं के चिंता का स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य वर्ग के आधार पर सह–सम्बन्ध की स्थिति एवं प्रभाव

क्र.स.	समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता
1.	कला वर्ग की शिक्षिकाएं	800	0ण्0756	सकारात्मक
2.	विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाएं	400	0ण्2253	सकारात्मक

तालिका संख्या 2 में मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाली शिक्षिकाओं की चिता के स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है जिसमें कला वर्ग की शिक्षिकाएं और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.0756 प्राप्त हुआ है जो दोनों के मध्य सकारात्मक सहसंबध को दर्शाता है अर्थात् इससे सिद्ध होता है कि कला वर्ग की शिक्षिकाओं की चिंता के स्तर और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या 2 में मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाली शिक्षिकाओं की चिंता के स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है जिसमें विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाएं और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.2253 प्राप्त हुआ है जो दोनो के मध्य सकारात्मक सहसंबध को दर्शाता है अर्थात् इससे सिद्ध होता है कि विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं की चिंता के स्तर और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या – 3

मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाली शिक्षिकाओं के चिंता का स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य विद्यालय की स्थिति के आधार पर सह–सम्बन्ध की स्थिति एवं प्रभाव

क्र.स.	समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता
1.	सरकारी विद्यालय की शिक्षिकाएं	600	0.0126	नकारात्मक
2.	गैर सरकारी विद्यालय की शिक्षिकाएं	600	0.2200	सकारात्मक

तालिका संख्या 3 में मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाली शिक्षिकाओं की चिंता के स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है जिसमें सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाएं और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.0126 प्राप्त हुआ है जो दोनों के मध्य नकारात्मक सहसंबध को दर्शाता है अर्थात् इससे सिद्ध होता है कि सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं की चिंता के स्तर और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या 3 में मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाली शिक्षिकाओं की चिंता के स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है जिसमें गैर सरकारी विद्यालय की शिक्षिकाएं और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.2200 प्राप्त हुआ है जो दोनों के मध्य सकारात्मक सहसंबध को दर्शाता है अर्थात् इससे सिद्ध होता है कि गैर सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं की चिंता के स्तर और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।

निष्कर्ष :–

1. मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिंता के स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य क्षेत्रीय आधार पर सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
2. मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिन्ता के स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य वर्ग के आधार पर सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
3. मुरादाबाद मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में चिन्ता के स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य विद्यालय की स्थिति में सक़ारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

कक्कर वेद (1983):*''कार्यशील महिलाओं की अभिवृत्ति, मूल्य, व्यवसायिक रूचि का उनकी कार्य संतुष्टि से सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन''*, पी0एच0डी0 (मनोविज्ञान), डॉ वी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

कुमार, एस. (2007):*''अनुसूचित जाति एवं समान्य जाति के किशोर वर्ग के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का शैक्षिक निष्पत्ति, बुद्धि, स्मृति तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन''* शोध प्रबन्ध (शिक्षा शास्त्र) एम0 जे0 पी0 रुहेलखण्ड बरेली।

कुमार, एम. (2008):*''धार्मिक भिन्नता का रेनवाल क्षेत्र वे कक्षा 10 के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में उनके शास्वत मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन''* लधु शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर।

कपूर एस0के0 (2012):''उच्च शिक्षा की प्रगति एवं समस्याएं'', पी–एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र), बनारस विश्वविद्यालय बनारस।

****

Impact Factor : 5.145

ISSN : 2395-728X

Shiksha Shodh Manthan

A Half Yearly International Peer-Reviewed Journal of Education

Vol.6, No.2, October 2020

Shiksha Shodh Manthan

A Half Yearly International Peer-Reviewed Journal of Education